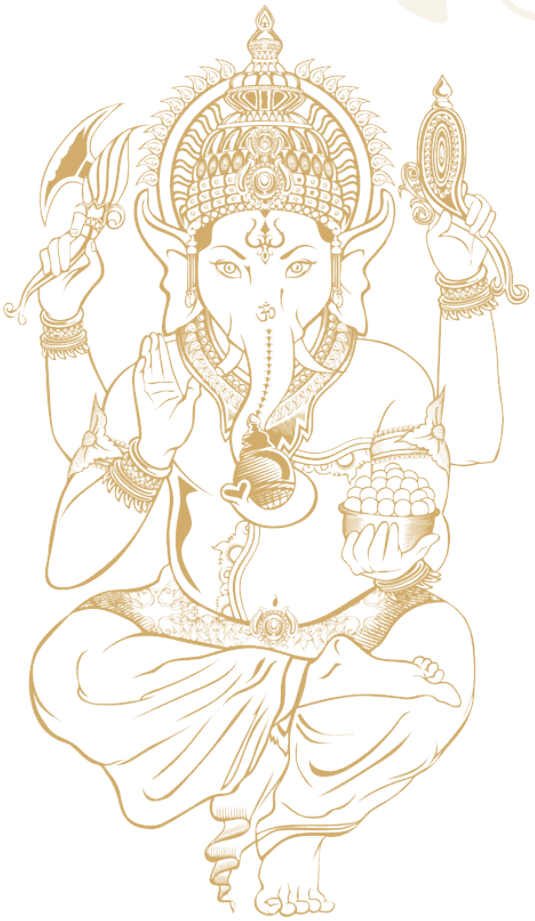

Mr.Baby boy

23 Oct 2025

10:20 AM

Jaitaran

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119874401**

तिथि 23/10/2025 **समय** 10:20:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Jaitaran **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:06
अक्षांश 26:14:00 उत्तर **रेखांश** 74:00:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:00 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:53:27 घं
वेलान्तर	00:15:43 घं
सूर्योदय	06:37:41 घं
सूर्यास्त	17:58:46 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	कार्तिक
पक्ष	शुक्ल
तिथि	2
नक्षत्र	विशाखा
योग	आयुष्मान
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	तू-तुकाराम
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	शुक्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

गुरु 10वर्ष 11मा 20दि

गुरु

23/10/2025
12/10/2036

	00/00/0000
	23/10/2025
बुध	19/09/2027
केतु	25/08/2028
शुक्र	26/04/2031
सूर्य	12/02/2032
चन्द्र	13/06/2033
मंगल	20/05/2034
राहु	12/10/2036

योगिनी

धान्या 2वर्ष 0मा 20दि

धान्या

23/10/2025
13/11/2027

	00/00/0000
	23/10/2025
भद्रिका	13/11/2025
उल्का	14/05/2026
सिद्धा	13/12/2026
संकटा	14/08/2027
मंगला	13/09/2027
पिंगला	13/11/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:14:58	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			05:49:22	तुला	चित्रा	4	मंगल	चंद्र	नीच राशि	1.25	पुत्र	पितृ	मित्र
चंद्र			24:11:25	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.13	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			27:01:02	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	0.98	अमात्य	भ्रातृ	जन्म
बुध			28:40:03	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.36	आत्मा	ज्ञाति	जन्म
गुरु			00:19:05	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	चंद्र	उच्च राशि	1.27	कलत्र	धन	जन्म
शुक्र			17:21:52	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	नीच राशि	1.12	मातृ	कलत्र	वध
शनि	व		02:01:52	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.88	ज्ञाति	आयु	जन्म
राहु	व		23:23:13	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		23:23:13	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

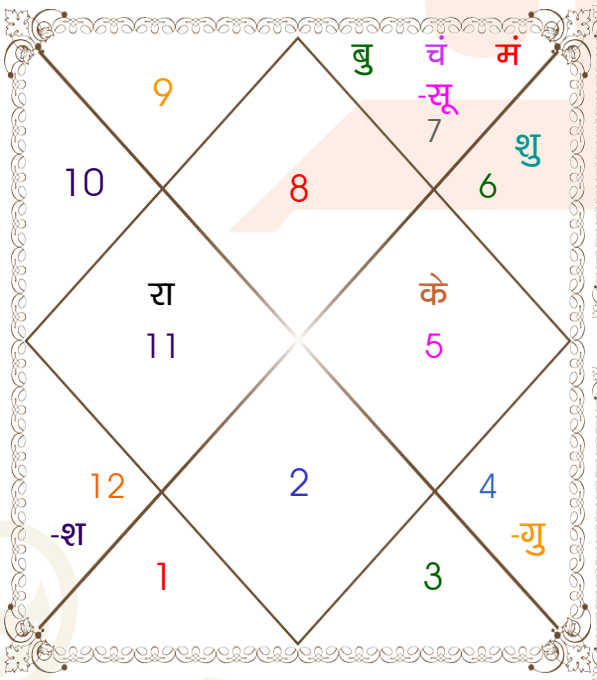

चन्द्र कुंडली

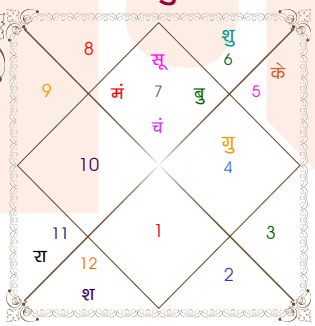

नवमांश कुंडली

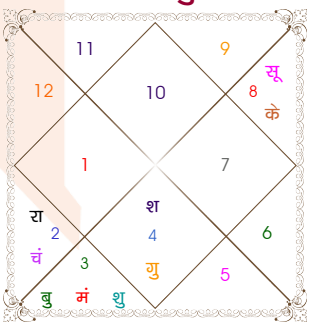

सर्वाष्टकवर्ग

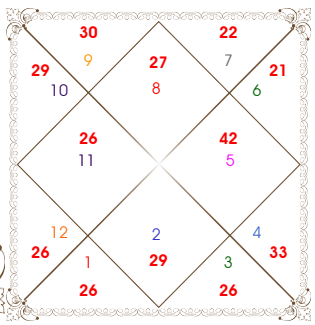

दशमांश कुंडली

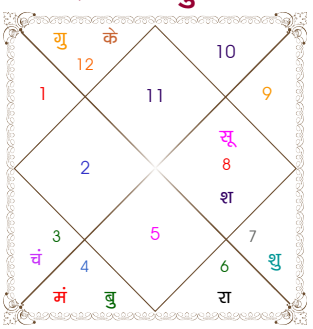

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग सर्प, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "तु" या "तू" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आप हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहने वाले पुरूष होंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी के आदेश तथा सलाह के अनुसार सम्पन्न करें। उसकी आज्ञा के बिना आप किसी भी सांसारिक कार्य को स्वयं सम्पन्न करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। आपकी प्रवृति अभिमानी होगी तथा यदा कदा अनावश्यक रूप से इस प्रवृति का समाज में प्रदर्शन करेंगे। अतः अन्य लोगों का आपके प्रति विशेष लगाव नहीं रहेगा सभी आपको उपेक्षित करना चाहेंगे। शत्रुओं का नाश करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे। वे आपसे काफी भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे। आपका स्वभाव अत्याधिक कोधी होगा। छोटी छोटी बातों में आप अकारण ही उत्तेजित हो जाएंगे इससे कई बार आपको आथिक तथा सामाजिक तिरस्कार भी सहन करना पड़ सकता है।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक कोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक कोधी स्वभाव का होता है।

आपके मन में दूसरों के प्रति कभी कभी ईर्ष्या की भावना भी विद्यमान रहेगी। यदि कोई भी व्यक्ति आपकी अपेक्षा कोई अच्छा कार्य या कोई उपलब्धि प्राप्त करता हैं तो आपके मन में उसके प्रति द्वेष भावना उत्पन्न हो जाएगी। तथा अपनी सीमा से अधिक वस्तुओं को प्राप्त करने का लालच आपके अर्न्तमन में हमेशा विद्यमान रहेगा। अतः मानसिक रूप से आप हमेशा आन्दोलित से रहेंगे। आपका शरीर कान्तिमय तथा आकर्षक रहेगा एवं बोलने में आप दक्षता प्राप्त करेंगे। अपनी इसी वाक्पटुता के आधार पर आप अपने पूर्ण कार्य सिद्ध करने में सफल रहेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आप नैसर्गिक रूप से धामिक भावनाओं से युक्त रहेंगे तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि क्रियाओं को सम्पन्न करते रहेंगे। आपकी मित्रता का क्षत्रे विस्त्रत नहीं रहेगा तथा आपके वास्तविक भिन्न अल्प सख्या में ही रहेंगे।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

अल्प ही आप ह्दय से कठोर रहेंगे तथा किसी के भी प्रति आपके मन में करूणा का भावना रहेगा। आपकी इस कठोरता से लोग आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे साथ ही अन्यजनों से भी आपके परस्पर मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आप शरीर तथा मुख से सन्दर परिलक्षित होंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होगी तथा नासिका भी उन्नत रहेगी। विविध प्रकार के वाहनादि साधनों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा भूमि एवं वाहनों से आप पूर्ण शक्तिशाली होकर इनसे पर्याप्त मात्रा में लाभार्जन करेंगे। जिससे आप धन वैभव तथा ऐश्वर्य से पुरूष कहलाएंगे। इनका आपके जीवन में कभी भी अभाव नहीं रहेगा। पराक्रम की आप में बहुलता रहेगी तथा समाज के सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। स्त्री के आप सम्पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा उसी के निर्देशानुसार अपने ग्रहस्थ जीवन को सम्पन्न करेंगे। कई कार्यों के आप ज्ञाता होंगे तथा उन्हे सम्पन्न करने में दक्ष रहेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के आप भक्त रहेंगे। इनके प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी। धन धान्य को संग्रह करने में भी आप चतुर होंगे। बन्धुवर्ग के आप विशेष

हितकारी रहेंगे तथा हमेशा उनके हितकार्यों को करने में तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप देवताओं ब्राहमणों तथा सज्जनों की सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे एवं इनके प्रति अपने मन में पूर्ण श्रद्धाभाव रखेंगे। आप उच्चकोटि के विद्वान होंगे तथा शुद्धता पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आप भ्रमण प्रिय रहेंगे तथा अपना अधिकाँश समय यात्रादि पर ही व्यतीत करेंगे। खरीदने तथा बेचने अथवा व्यापारिक कार्यों में आप अत्यन्त ही दक्षता का परिचय देंगे। समाज में आप देववाची शब्द के द्वितीय नाम से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। अपने सम्बन्धी तथा बन्धुओं के आप परम सहयोगी तथा उपकारी होंगे परन्तु यही लोग आपकी बाद में अपेक्षा भी करेंगे। साथ ही धनधान्यादि से भी आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यवान व्यक्ति होंगे तथा अधिकांश महत्वपूर्ण कार्यों को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करने के लिए यत्नशील रहेंगे। शीघ्रता पूर्वक कार्य करना आपकी प्रकृति के विरूद्ध रहेगा। आप पूर्ण रूप न्याय प्रिय होंगे तथा मन से न्याय करना पसन्द करेंगे। आपकी इसी प्रवृति को मध्य नजर रखते हुए अन्य लोग अपने विवादों को सुलझाने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच मनोनीत करेंगे। साथ ही आपकी संतति भी अल्प मात्रा में रहेगी एवं भाग्योदय भी काफी समय बाद होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आप मध्यम कद के पुरूष होंगे तथा राज्य के उच्च अधिकारी तथा पदाधिकारी वर्ग को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने की कला में चतुर रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आप कभी कभी अत्याधिक मात्रा में बोलने लगेंगे जिससे लोग आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। इसके अतिरिक्त ग्रह नक्षत्रादि शास्त्र अथवा ज्योतिष शास्त्र का भी आपको ज्ञान रहेगा। बन्धु वर्ग एवं सेवको के प्रति हमेशा आपके मन में अनुराग की भावना विद्यमान रहेगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वो।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।

अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप सर्वदा कुअवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपके आथिक या सामाजिक हानि उठानी पड़ेगी इससे आप अत्यन्त दुःख की अनुभूति करेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं कार्य प्रिय होगी जो अन्य जनों को सुनने में अच्छी लगेगी। साथ ही दीन दुःखियो के प्रति आपके मन में दयालुता का भाव भी रहेगा तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का जीवन में यत्न पूर्वक पालन करेंगे। आपके नेत्र भी चंचलता से युक्त रहेंगे। आपके धनागमन में अस्थिरता रहेगी कभी अत्याधिक धनागमन होगा तथा कभी अत्यल्प मात्रा में विद्यमान रहेगा। इससे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे। घर के अन्दर आप अत्याधिक बल का अहसास करेंगे परन्तु बाहर एक दम कमजोर बन जाएंगे। मित्रो के आप प्रिय रहेंगे तथा विदेश में भी प्रवास कर सकेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

नाना प्रकार के वाहनों से आप युक्त रहकर जीवन में सहर्ष उनका उपभोग करेंगे। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे। स्त्री के आप अतिप्रिय होंगे तथा उससे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति करेंगे। साथ ही सम्पूर्ण जीवन वैभव से परिपूर्ण रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी कभी कभी प्रवृति बेकार की बातों को अधिक बोलने की रहेगी जिससे आपका सामाजिक प्रभाव न्यून रहेगा। आप का हृदय भी कठोरता के भाव से युक्त रहेगा तथा दया के भाव की इसमें अल्पता रहेगी। साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आप सर्वदा उद्यत रहेंगे क्योंकि आपकी प्रवृति पूर्ण रूप से साहसयुक्त रहेगी। साथ ही आप किसी भी बात पर शीघ्र ही अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे आपका शरीर स्वस्थ एवं बलवान रहेगा तथा अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा जिससे अधिकांश लोग आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। अतः आपको संयम तथा विनम्रतापूर्वक अन्य जनों से व्यवहार करना चहिए।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित रह सकते हैं। आपका शारीरिक सौन्दर्य भी मध्यम रहेगा परन्तु वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटुता को प्राप्त

होगी जिससे श्रोता आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधूर शाब्दो का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को स्वच्छन्दता से सम्पन्न करना चाहेंगे। धनादि के अर्जन में तत्पर रहकर उसे संग्रह करने की भी प्रवृति आपमें रहेंगी। आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण प्रशिक्षित रहेंगे अतः अन्य लोगों को यथोचित सम्मान प्राप्त करेंगे। आप हमेशा वैभव एवं ऐश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। सद्गुणों को ग्रहण करने की शक्ति आपमें अधिक मात्रा में रहेगी परन्तु आप अपने ही मुख से अपनी बडाई स्वयं करेंगे जिससे समाजिक जन से आपको उचित आदर प्रदान करने में अपने को असमर्थ सा महसूस करेंगे।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति

उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, चतुर्दशी तिथियां, नवमी, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शुक्ल योग, शतमिषा नक्षत्र, तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सर्तक रहे।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक परेशानी, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देवी लक्ष्मी जी की आराधना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल इत्यादि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आपके अशुभ फल कम होंगे। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।